UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

स्थापना : ९ जानेवारी १९२७

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ६ – डिसेंबर २०२३ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९१
- पुरवणी अंक : ६

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे
- प्रा. डॉ. सुभाष वाघमारे
- प्राचार्य डॉ. राजेंद्र मोरे

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

मूल्य रु. १००/-
वार्षिक वर्गणी रु. ५००/-, आजीव वर्गणी रु. ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, वारजे-माळवाडी, पुणे ५८.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

अनुक्रमणिका

1. **कुँअर बेचैन के ग़ज़लों में धार्मिक बोध विश्वशांति के संदर्भ में**
   - डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे ---------- 9

2. **हिंदी काव्य में विश्वशांति**
   - डॉ. दिलीपकुमार कसबे ---------- 13

3. **विश्वशांति एवं विकास में पर्यावरण केंद्रित हिंदी उपन्यासों का योगदान**
   - प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे ---------- 16

4. **विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में दिनकर जी का 'कुरूक्षेत्र'**
   - प्रा. मारूफ मुजावर ---------- 20

5. **'फ्री टिबेट' काव्य संग्रह में विश्वशांति का संदेश**
   - प्रा.डॉ.प्रशांत रामचंद्र नलवडे ---------- 24

6. **विश्व शांति और राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज**
   - डॉ.संजीवनी संदीप पाटील ---------- 26

7. **कवि नीरज के काव्य में विश्व मानवता तथा विश्व शांति का संदेश**
   - डॉ. भोसले जी.एस. ---------- 30

8. **'राहुल' खंडकाव्य में विश्वशांति का संदेश**
   - डॉ गोरख निळोबा बनसोडे ---------- 33

9. **'विश्वशांति एवं विकास में हिंदी काव्य का योगदान'**
   - डॉ.नितीन हिंदुराव कुंभार ---------- 39

10. **विश्वशांति एवं विकास में हिंदी भाषा का योगदान**
    - प्रा. बगनर ज्ञानेश्वर किसन ---------- 42

विश्व शांति और राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

डॉ.संजीवनी संदीप पाटील
हिंदी विभाग प्रमुख,
कला, वाणिज्य और विज्ञान महा. गडहिंग्लज
दूरभाष - 9545227228
ईमेल : patilssu20@gmail.com

शोध सार:

साहित्य का मूल तत्व सबका हित साधन है। अखिल विश्व पटल पर मित्रता और सद्भाव का ध्वज फहराने का काम हिंदी साहित्य कर रहा है। साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है। साहित्य के योगदान बिना समाज का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। वर्तमान में पृथ्वी पर युद्ध और विनाश की फसलें बढ़ रही हैं। आज इक्कीसवीं सदी ने दुनिया को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। ऐसे समय में मृत्यु और भय के इस भयानक अंधकार में,विश्व मानवता की आवश्यकता है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज मानवता के महान उपासक और अध्यात्म के क्षेत्र के वैज्ञानिक क्रांतिकारी संत थे। मानवता के एक मजबूत प्रकाशस्तंभ के रूप में राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज जी को पहचाना जाता है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन जाति,वर्ग,पंथ या धर्म से परे समाज की सेवा के लिए समर्पित किया था। तुकडोजी महाराज का मानना था कि मानवीय संबंध मानव अस्तित्व की नींव है। आज विज्ञान के इस युग में यदि हमें प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रवाह में मन को विकसित करना है और आत्म-क्रांति के माध्यम से मानवता की फसल उगानी है, तो राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के दर्शन की आवश्यकता है।

बीज शब्द : मानवता,विश्वशांति, मित्रता, सद्भाव, संवेदना, संस्कृति, देशभक्ति, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ।

प्रस्तावना :

आतां विश्वात्मकें देवें। येणें वाग्यज्ञें तोषावें।
तोषोनी मज द्यावें। पसायदान हें।।

संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश देने वाले संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर माऊली ने अपनी ज्ञानेश्वरी के पसायदान में विश्व के मंगल कामना की है। संपूर्ण विश्व को मानवता का संदेश देनेवाले भारत की इस पवित्र धरती पर अनेक महान साधु-संतों का जन्म हुआ। जिन्होंने पूरे विश्व को शांति, सद्भावना और समानता का संदेश दिया।

'हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभावः साहित्यम।'

साहित्य का मूल तत्व सबका हित साधन है। अखिल विश्व पटल पर मित्रता और सद्भाव का ध्वज फहराने का काम हिंदी साहित्य कर रहा है। साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है। साहित्य केवल विरेचन का काम नहीं करता बल्कि वह समाज के शुद्धिकरण का भी काम करता है। साहित्य का संबंध प्रेम और करुणा से होता है। संवेदना साहित्य के भाव में निहित होती है। संवेदना अर्थात एक की वेदना दूसरे तक पहुंचाना। साहित्य कभी भी आंख नहीं चुराता। साहित्य हमेशा विकल्प तैयार करता है। क्योंकि साहित्य का रचनाकार व्यक्ति होता है। भारत के प्राचीन ग्रंथ रामायण और महाभारत दोनों युद्धों का वर्णन करते हैं पर मूल में शांति है। भारतवर्ष में विभिन्न धर्म, संप्रदाय, प्रांत, भाषा तथा रीति-रिवाज के लोग निवास करते हैं। अनेकता में एकता ही भारत की पहचान है। वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देने वाली भारतीय संस्कृति के मूल में समन्वय की भावना निहित है। भारतीय संस्कृति सामाहिक संस्कृति है। संस्कृत सुभाषितकार ने कहा है-

अनेक प्रदेशाः अनेकेचवेशाः अनेका निरुपाणी
भाषा अनेकाः।
परं यत्र सर्वेवयं भारतीयाः प्रियं भारतंततसदा रक्षणीयम ।।

परंतु आज इक्कीसवीं सदी ने दुनिया को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। पृथ्वी पर युद्ध और विनाश की फसलें बढ़ रही हैं। मनुष्य जगत मरणासन्न अवस्था में पहुँच गया है। सत्ता,धर्म और व्यापार के लिए आज युद्ध चल रहे हैं। रूस और यूक्रेन,इजराईल और गाझा का उदाहरण हमारे सामने है। राजनीति,धर्मप्रचार और व्यवसाय के लिए आज विश्व में युद्ध हो रहे हैं। धर्म और राजनीति दूसरे को अपने जैसा बनाने पर बल देती है। यह बनाने की भावना ही युद्ध में परिवर्तित होती है। साहित्य दूसरे को अपने जैसा मानने पर बल देता है। मानने और बनाने में बहुत फर्क होता है। साहित्य के योगदान बिना समाज का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है।

ISSN No 2394-5990

मृत्यु और भय के इस भयानक अंधकार में,विश्व मानवता की आवश्यकता है।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के विचार :

मानवता के एक मजबूत प्रकाशस्तंभ के रूप में राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज जी को पहचाना जाता है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज मानवता के महान उपासक और अध्यात्म के क्षेत्र के वैज्ञानिक क्रांतिकारी संत थे। जिन्होंने 20 वीं और 21वीं सदी के स्वर्ण युग में सूर्य के तेज से आलोकित होकर मृत लोगों में जीवन शक्ति का संचार किया। महाराष्ट्र के अमरावती जिले के यावली गांव में एक निर्धन परिवार में तुकडोजी महाराज जी का जन्म हुआ। उनका मूल नाम माणिक बन्डोजी इंगळे था। वे आडकोजी महाराज के शिष्य थे। उनका जीवन आध्यात्मिक और योगाभ्यास जैसे साधन मार्गो से पूर्ण था। उन्होंने अपना प्रारंभित जीवन का अधिकांश समय जंगलों में बिताया था। यद्यपि उन्होंने औपचारिक रूप से बहुत ज्यादा शिक्षा नहीं ली थी पर उनकी आध्यात्मिक भावना और उसकी संभाव्यता बहुत ही उच्च स्तर की थी। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन जाति,वर्ग,पंथ या धर्म से परे समाज की सेवा के लिए समर्पित किया था। तुकडोजी महाराज का मानना था कि मानवीय संबंध मानव अस्तित्व की नींव है। तुकडोजी महाराज ने अपना परिचय देते समय भी इसे मानवता है पंथ मेरा,इंसानियत है धर्म मेरा जैसा कहा है। अपने अनुभव और अंतर दृष्टि के आधार पर तुकडोजी महाराज जी ने ग्राम गीता की रचना की। जिसमें उन्होंने वर्तमान की कई स्थितियों का निरूपण करते हुए ग्रामीण भारत के विकास के लिए एक सर्वथा नूतन विचार का प्रतिपादन किया। 1955 में उन्हें जापान में होने वाले विश्व धर्म संसद और विश्व शांति सम्मेलन के लिए निमंत्रित किया गया। राष्ट्रसंत तुकडोजी द्वारा खंजडी के स्वर के साथ दोनों ही सम्मेलनों का उद्घाटन हुआ।

आज समाज भय से भरा हुआ है। धर्म का शुद्ध स्वरूप नष्ट हो गया है। जाति-पाति के पूर्वाग्रह के कारण लोगों की बुद्धि पर ईर्ष्या, घृणा और हिंसा का ग्रहण लग गया है। इससे मानव समाज शंकालु एवं संस्कारहीन हो गया है। ऐसे अभावग्रस्त मानव समाज को राष्ट्रसंतों ने अपने साहित्य एवं भजनों के माध्यम से आत्म-जागरूकता की ओर मोड़ने का भरपूर प्रयास किया है। लहरकी बरखा पुस्तक में वे लिखते हैं, 'इंसान ही है देवता जो सत्य के पथ पर आ गया।' तुकडोजी महाराज ने मानव मन को विकसित कर मनुष्य को देवलोक तक ले जाने का कार्य किया है। राष्ट्रसंत केवल जन सुधार का संदेश देकर ही नहीं रुके, बल्कि उन्होंने अखिल भारतीय श्री गुरुदेव सेवा मंडल की स्थापना की, जो नैतिक चरित्र और सामाजिक जागरूकता की भावना वाले देशभक्तों और मानवता के सेवकों का एक संरचित संगठन है। उनकी ग्रामगीता मपहले किया फिर कहाफ के सिद्धांत के साथ मानव सुधार और मानवता के मूल्यों पर आधारित है।

''समझ धर जरा, मनुज सुजानो हो ! जगत सब अंधा
सुन पाओ ।।
ग्यानबिन जगमें, दिल ना बहलाओ श्र भ्रांतिसि भव
ना अपनाओ ।
संतसाधूसे, पार उतर जाओ । हरिको भजके गुण गाओ ।
रातदिन उसमें, रमते फिर जाओ । जगत् सब ।।''

मनुष्य संसार का केन्द्र है। तो पहला आधार है मानव व्यवहार। यदि इसे अच्छे संस्कारों के साथ संरक्षित रखा जाए तो एक अहिंसक और मानवतावादी सदाचारी बुद्धिमान व्यक्ति या बुद्धिमान नागरिक बनाया जा सकता है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का समग्र दर्शन इसी पर आधारित है। डॉ.शंकर दयाल शर्माजी का भी कथन इसकी पुष्टि करता है, 'हर राष्ट्र के पास अपना चिंतन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं, जिन्हें वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। मैं यह मानता हूं की भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वाले के संस्कृति और संस्कार भी जुड़े होते हैं।'[5]

आज देश को एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो बुद्धिमान हो और सार्वभौमिक मानवता की समझ रखता हो। राष्ट्रसंतों का दृढ़ विश्वास है कि मनुष्यों का ऐसा न्यायपूर्ण वर्ग ही स्वर्ग है। इसे पूरा करने के लिए उन्होंने सामुदायिक ध्यान और प्रार्थना के माध्यम से पूजा का एक बहुत ही सरल और सार्वभौमिक तरीका बनाया है।

''धर्म किसका हो कोई, पर वर्म सबके एक हो ।
हम भाईसम बिचरें सदा, लहरें चले संतोषकी ।।
हों गरिब या के अमिर, सुख-दुःख सबमें एक हो ।
गर मर मिटें तो हम सभी, हो ख्याल ऐसे होशकी ।।''[6]

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने मन के खेतों में हल चलाकर मानवता की फसल उगाने का कठिन कार्य किया है। उनका कहना है कि ये सीमाएँ प्रत्येक देश द्वारा केवल व्यवस्था के लिए खींची जाती हैं। लेकिन ईश्वर के राज्य में, ब्रह्मांड ही देश है। उस लिहाज से दुनिया के लोगों को मानवता, स्नेह, प्यार और आपसी सहयोग की जरूरत है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने अपने जीवनकाल में ही मानवतावादी एवं धर्मनिष्ठ समाज के निर्माण का कठिन कार्य प्रारंभ किया और आज हजारों प्रचारकों के माध्यम से मानवता का मार्ग प्रशस्त हुआ है।प्रभु की प्रार्थना करते हुए वे कहते है कि,

"ऐ विश्वके चालक प्रभो ! मुझमें समझ दे विश्वकी ।
इस अखिल मानवधर्मके, आदर्श ऊँचे वेषकी ।।
दुःख है इसका हमें, हम अवनती क्यों पा रहे ? ।
शील यह हममें भरा, सेवा करे हम देशकी ।।
है मनुज हम देहसे, पर कर्म हैं सब भूलके।।"

राष्ट्रसंतों ने वंचित, दुखी, परिश्रमी आत्माओं की असहनीय पीड़ा को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने इस देश की पीड़ा को अपने शरीर की पीड़ा समझकर दलित, असहाय जनता की सेवा को पहली प्राथमिकता दी। राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज ने लोगों को सिखाया है कि दलित, दुखी, मेहनतकश, पीड़ित और गरीब आत्माओं की सेवा मानवता का सबसे बड़ा गुण है, इसलिए सार्वजनिक सेवा भगवान की सेवा है और यह मानवता की पूजा और राष्ट्र की सेवा है।

"प्रेम धरे तब तरा अजामिल, सतगुण स्मरता हे।
प्रेमहिसे धूव बनको निकला,स्थिर पद बरता है।।
प्रेमरस सही चाख लिया,तब वहिरूप धरता हे ।
कहता तुकड्या प्रेमहि तारे, उसीसे मरता है।।
बिरला बंदा ऐसा निकले, आपहि को जानी।।"

मनुष्य में बुरे विचारों और जहरीली प्रवृत्तियों को नष्ट करने के लिए सत्यधर्म की संस्कृति और सेवा के आध्यात्मिक सिद्धांतों को मानव जीवन में शामिल करना आवश्यक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व के भविष्य में जब विभिन्न अनुसंधानों के माध्यम से समस्त मानवता का व्यापक दृष्टिकोण सामने आएगा, तब राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का दर्शन मानवता की सूची में सबसे ऊपर होगा। 1955 में, जापान के टोक्यो में आयोजित विश्व शांति और विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि ने आग्रह किया कि यदि केवल शांति का प्रदर्शन करने के बजाय राष्ट्रों के सह-अस्तित्व को बनाए रखना है, तो सभी राष्ट्रों को शांति के सिद्धांत का सख्ती से पालन करना चाहिए।

"आज तलक इस झगडे म्याने, खूब तमासा पाया।
नरतन में कुछ करले करनी, झूठ समझके माया।।
मेरा मेरा करके भाई, सारी उमर गमाई।
दगाबाज से सोबत कीनी, अंत अकेला जाई ।।"

उनके भजनों, भाषणों और लेखों में विश्व शांति का ग्राफ बिल्कुल स्पष्ट है। आज एक सार्वभौमिक तत्व के रूप में गाँव की ओर देश का ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है। क्योंकि,मानवता का महान कार्य गांव से ही किया जा सकता है। इसीलिए राष्ट्रसंतों की ग्रामगीता विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा देने की शक्ति सिद्ध करती है। जीवन को मानवता और राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने का काम गाँव ही कर सकता है। इसलिए गॉव के सुधार हेतु नशाबंदी एवं व्यसन निर्मुलन का काम करते हुए वे कहते है कि,

"जबकि नेकी से जीता है। तब तू शराब क्यों पीता है?
तुझे पता है, आज तलक ये, शराब किसने खायी?
मांसाहारी औ व्यभिचारी , उनकी यह बाता हैं।
तब तू शराब क्यों पीता है?"

तुकडोजी महाराज एक सच्चे राष्ट्रीय संत हैं जो राष्ट्र की सेवा के लिए अथक प्रयास करते हैं। इस धर्मनिष्ठ अवलिया के पास नाकाबंदी में फंसे देश को मुक्त कराने के लिए अपना साधु कर्तव्य त्यागने की शक्ति थी। तुकडोजी महाराज वर्ष 1955 में विश्व धर्म एवं विश्व शांति सम्मेलन के लिये जापान गये। कई पश्चिमी और पूर्वी विद्वान उनके भजनों से बहुत प्रभावित हुए। वह अपने भजनों के माध्यम से सभी धर्मों,पंथों और जातियों से परे ईश्वर के स्वरूप को प्रकट करते थे। तुकडोजी महाराज विश्व हिंदू परिषद के संस्थापक उपाध्यक्ष थे। आजादी के बाद भी उन्होंने राष्ट्रहित के लिए कई स्तरों पर काम किया। बंगाल का अकाल, चीन युद्ध, पाकिस्तान युद्ध, कोयना भूकंप की तबाही, प्रभावित क्षेत्रों में रचनात्मक राहत कार्य में महाराज स्वयं इन सभी अभियानों सम्मिलित थे।

तुकडोजी महाराज ने आचार्य विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में भी भाग लिया था। भारत गाँवों का देश है, इस बात को ध्यान में रखते हुए तुकडोजी महाराज की मान्यता और विचारधारा थी कि यदि गाँव का विकास होगा, तो राष्ट्र का विकास होगा। ग्रामोत्थान एवं ग्रामकल्याण ही उनके चिंतन का केन्द्र था। गाँव को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तुकडोजी महाराज ने जो उपाय सुझाये वे बहुत कारगर सिद्ध हुए। उन्होंने पाखंड और अंधविश्वासों को मिटाने के लिए अथक प्रयास किया। सर्वेश्वरवाद भी इस राष्ट्रसंत के विचार जगत की एक विशेषता थी। तुकडोजी महाराज विवेकपूर्ण जीवन दृष्टि से एकेश्वरवाद की वकालत करते थे। अपने जीवन की अंतिम सांस तक उन्होंने अपने प्रभावशाली खंजीरी भजन के माध्यम से अपनी विचारधारा का प्रचार-प्रसार कर आध्यात्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय ज्ञान का प्रचार किया।उनकी मराठी की प्रार्थना है कि,

"या भारतात बंधु-भाव नित्य वसू दे। दे वरचि असा दे"

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज कहते हैं कि दुनिया में एकता,समता स्थापित करने के लिए भाईचारे से आसान कोई दूसरा रिश्ता नहीं है। भाईचारे के कारण सभी लोग एक-दूसरे से भाईचारे के बंधन में बंधे रहेंगे। एक बार जब भाईचारा स्वीकार करेंगे, तो आपस में स्नेह,गर्मजोशी,निःस्वार्थता और सेवा का प्रवाह पनपने लगेगा। फिर, किसी भी देश में पंथ और संप्रदाय,राजनिति और राजनीति के नाम पर युद्ध नहीं होंगे। भाईचारे के इस धागे से

ISSN No. 2394-5990

अगर दुनिया के सभी संप्रदायों के लोग बंधे रहेंगे तो विश्वशांति का सपना पूरा हो जाएगा। वे प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि ,मानव जाति एक हो जाएगी और एक बार यह एकसाथ बन जाएगी,तो हमारा देश आसानी से प्रगति की नई दिशाओं तक पहुंच जाएगा।गरीब- अमीर सद्भाव और खुशी से रहेंगे,चाहे हिंदू हों या ईसाई या मुस्लिम सभी भाईचारे से एक दूसरे का सम्मान करेंगे।

निष्कर्ष :

अतंत: हम कह सकते है कि,आज विज्ञान के इस युग में यदि हमें प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रवाह में मन को विकसित करना है और आत्म-क्रांति के माध्यम से मानवता की फसल उगानी है, तो राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के दर्शन की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए देश की सरकार को भी राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के विचारों के प्रति जागृत होना आवश्यक है। इस दुनिया में मानवता के बीज बोने का काम केवल तुकडोजी महाराज के विचार ही कर सकते है। देश की एकता,अखंडता को बनाए रखना समय की आवश्यकता है। कुछ विघातक शक्तियां भाषा,धर्म,जाति,प्रांत के नाम पर देश को,विश्व को बाँट्ने की कोशिश कर रही है। धर्म तो हमेशा सद्भावना का पाठ पढाता है। हिंदी कवि उदयभानु सिंह के शब्दों में,

"जातियाँ कई है इंसान एक है,
हिंदू सिख औ मुसलमान एक है
सबका धर्म एक औ इमान एक है,
चाहे गुरु अल्लाह भगवान एक है।"

अत: 'ॐम सर्वे भवन्तु सुखिन:,सर्वे सन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,मां कश्किद्दु:दु:खभाग्भवेत्'। का बाना अपनाकर 'वसुधैवकुटुंबकम' का संदेश देने वाले राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के विचार अखिल विश्व पटल पर मित्रता,सद्भाव और शांति का ध्वज फहरा रहा है।

संदर्भ :

1. श्रीज्ञानेश्वरी- अध्याय - 18 - 1793
2. भाषा साहित्य और संस्कृति - डॉ. अमरसिंह वधान
3. भूमंडलीकरण: साहित्य,समाज और संस्कृति- डॉ. शशि भूषण कुमार 'शशि'
4. विश्व स्नेह समाज - गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, सितंबर 2021
5. tukadyadas.in/bhajans.php.हिंदी भजन खंड-1

■■■